उसके गांडि गुगल लोवान किथ निदे दुसरा दिपक जो हनुमानजि के आगे स्थापित ह
पाव सेर पक्का जिसमा घृत हो और दो घडि और एक पडि दो वति वाला हनुमानजि के
अग्र भागमे बालक के धरणा जो दुसरा दिपक आपकि प्राप वजा पतो कार्य होगा ना वले
तो नहि होगा सनि वा मंगल के दिन गोवर से लिपके मुत्र छिडक वति लाल सुत्र कि बा
ले सधु हो स्नान कर के २१ तार कि वति बाल ना कचिर किषा वति रेषना घृत गौ का बाल
ण धूप को दिपा लोवान कि देना अतर का फोवा १ फलेल सिंदुर लगाव सवा सेर लडुमा
भोग लगाव चणे कि दाल सवा सेर सवा पाव गुड भोग लगा कर पाठ पंचमुखि के करे
लगजाय दिपक चल जाय गा कार्य सिद्धि जानना ना वले तो कार्य हानि जानना इति श्री
पंचमुखि विधान समाप्तम् लेषत सिला राम मोहन कर १ गा नविवासे नवंदा [illegible] मध्ये ल
१९७० फाल्गुण